विष्णु भगवान की व्रत की कथा PDF

प्राचीन काल की बात है – एक बड़ा प्रतापी और दानवीर राजा था। वह हर गुरुवार को व्रत और पूजा करता था। उनकी रानी को यह पसंद नहीं है। वह न तो व्रत रखती हैं और न ही किसी को दान में एक पैसा देती हैं। वह राजा को ऐसा करने से मना करती थी। एक बार राजा शिकार खेलने जंगल में गया। घर में एक रानी और एक दासी थी। उस समय, गुरु बृहस्पति एक सन्यासी के वेश में राजा के द्वार पर भिक्षा माँगने आए।

जब साधु ने रानी से भिक्षा मांगी तो रानी कहने लगी हे साधु महाराज मैं इस दान, पुण्य से तंग आ चुकी हूं कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे यह संपूर्ण धर्म नष्ट हो जाए और मैं सुख में रह सकूं। साधु के रूप में वृहस्पति देव ने कहा, हे देवि। बड़े अजीब हो तुम कोई संतान और धन से भी दुखी रहता है, यदि तुम्हारे पास धन है तो उस धन को शुभ कार्यों में लगाओ ऐसा करने से तुम्हारे दोनों लोक सुधर जाएंगे। साधु की बात सुनने के पश्चात रानी ने कहा कि मुझे ऐसा धन नहीं चाहिए जिसे मैं दान कर सकूं कर सकूं और जिसको संभालने में मेरा सारा समय नष्ट हो जाए ।

साधु ने कहा, यदि तुम्हारी ऐसी इच्छा है तो जैसा मैं तुमसे कहता हूं वैसा करो। गुरुवार के दिन तुम घर को गाय के गोबर से लीपना, केशों को पीली मिट्टी से धोना, बाल धोते समय स्नान करना, राजा से हजामत बनवाने के लिए कहना, भोजन में मांस और शराब खाना, धोबी के पास धोने के लिए वस्त्र रखना। इस प्रकार सात गुरुवार करने से आपका सारा धन नष्ट हो जाएगा। ऐसा कहकर साधु बने भगवान वृहस्पति अंतर्ध्यान हो गए।

रानी ने ऋषि की सलाह के अनुसार केवल तीन गुरुवार बिताए थे कि उनकी सारी संपत्ति और संपत्ति नष्ट हो गई थी। परिवार खाने के लिए तरसने लगा। एक दिन राजा ने रानी से कहा, हे रानी। तुम यहीं रहो, मैं दूसरे देश में जाता हूं, क्योंकि यहां सब मुझे जानते हैं। इसलिए मैं कोई छोटा काम नहीं कर सकता। यह कहकर राजा परदेश चला गया। वहां वह जंगल से लकड़ी काटकर शहर में बेचता था। इस प्रकार वह अपना जीवन व्यतीत करने लगा।

इधर राजा के बिना रानी और दासी उदास रहने लगी। एक बार जब रानी और दासियों को सात दिन तक बिना भोजन के रहना पड़ा, तब रानी ने अपनी दासी से कहा, हे दासी। मेरी बहन पास के शहर में रहती है। वह बहुत अमीर है। तुम उसके पास जाओ और कुछ ऐसा ले आओ जिससे तुम थोड़े से जीवित रह सको।

pdfbox.com

दासी रानी की बहन के पास गई जिस दिन वह रानी की बहन के पास गई उस दिन गुरुवार था इसीलिए रानी की बहन गुरुवार की कथा सुन रही थी दासी ने अपनी रानी का सन्देश रानी की बहन को दिया, लेकिन रानी की बहन ने कोई उत्तर नहीं दिया। जब दासी को रानी की बहन का कोई उत्तर नहीं मिला तो बहुत दुखी हुई उसे बहुत गुस्सा भी आया और दासी ने वापस आने के बाद रानी को सारी बात बताइए सब कुछ सुनने के बाद रानी ने अपने भाग्य को कोसा।

उधर रानी की बहन ने सोचा कि मेरी बहन की दासी आई है, पर मैंने उससे बात नहीं की, इससे वह अवश्य ही बहुत दुखी हुई होगी। कथा सुनकर और पूजा समाप्त करके वह अपनी बहन के घर गई और बोली, हे बहिन। मैं गुरुवार को उपवास कर रहा था। तेरी दासी चली गई, पर जब तक कथा हो रही है तब तक वह न उठता और न बोलता, इस कारण मैं न बोली। मुझे बताओ कि नौकरानी क्यों गई थी।

रानी ने कहा, बहन। हमारे घर में अनाज नहीं था। यह कहते-कहते रानी की आंखों में आंसू भर आए। उसने नौकरानियों के साथ अपनी बहन को भी भूखा रहने की बात बताई। रानी की बहन ने कहा, देखो बहन। बृहस्पति देव सबकी मनोकामना पूर्ण करते हैं। देखो, शायद तुम्हारे घर में अनाज है। यह सुनकर दासी घर के भीतर गई और वहां उसे अनाज से भरा एक बर्तन मिला। वह बहुत हैरान हुआ क्योंकि उसने एक-एक बर्तन देख लिया था। उसने बाहर आकर रानी को बताया।

दासी रानी से कहने लगी, हे रानी। भोजन न मिलने पर व्रत करते हैं तो क्यों न उनसे व्रत की विधि और कथा पूछ लें, हम भी व्रत करेंगे। दासी के कहने पर रानी ने अपनी बहन से गुरुवार के व्रत के बारे में पूछा। उनकी बहन ने कहा गुरुवार के व्रत में केले की जड़ में चने की दाल और मुनक्का से भगवान विष्णु का पूजन करें और दीपक जलाएं। पीला भोजन करें और कथा सुनें। इससे गुरु भगवान प्रसन्न होते हैं, मनोकामना पूर्ण करते हैं। रानी की बहन व्रत और पूजा की विधि बताकर अपने घर लौट गई.

दासी और रानी दोनों ने मिलकर निश्चय किया कि वे अब भगवान बृहस्पति की पूजा किया करेंगी जब 7 दिनों के बाद गुरुवार आया तो उसने व्रत प्रारंभ किया फिर वह अस्तबल में गई और चना और गुड़ लाकर केले की जड़ और दाल के साथ भगवान बृहस्पति देव का सच्चे दिल से पूजा की वे दोनों पीले भोजन को लेकर चिंतित थी ? दोनों बहुत उदास थे। लेकिन उसने व्रत रखा था, जिससे भगवान बृहस्पति प्रसन्न हुए। एक साधारण व्यक्ति के रूप में उन्होंने दो थालियों में सुंदर पीला भोजन लाकर दासी को दिया और कहा, हे दासी। यह भोजन तुम्हारे और तुम्हारी रानी के लिए है, तुम दोनों इसे ग्रहण करो। खाना पाकर दासी बहुत खुश हुई। उसने सारी बात रानी को बता दी।

तब से वह हर गुरुवार को गुरु भगवान का व्रत और पूजा करने लगी। बृहस्पति देव की कृपा से उन्हें धन की प्राप्ति हुई। पर रानी ने फिर से पहले की तरह आलस्य शुरू कर दिया। तब दासी ने कहा, देखो रानी। पहले भी आप इसी तरह आलस्य करते थे, आपको धन रखने में कठिनाई होती थी, इस कारण सारा धन व्यर्थ हो जाता था। अब जबकि गुरु भगवान की कृपा से धन मिल गया है तो आलस्य आता है।

बड़ी मुश्किलों के बाद हमें यह दौलत मिली है, इसलिए हमें दान–पुण्य करना चाहिए। अब तुम भूखे लोगों को भोजन कराओ, पानी पिलाओ, ब्राह्मणों को दान दो, कुएँ–तालाब–सीढ़ियाँ आदि बनवाओ, मन्दिर–स्कूल बनवाकर ज्ञान दान करो, अविवाहित कन्याओं का विवाह कराओ, अर्थात् शुभ कार्यों में धन लगाओ, ताकि आपके कुल की कीर्ति में वृद्धि हो और स्वर्ग की प्राप्ति हो तथा पितर सुखी हों। दासी की बात सुनकर रानी शुभ कर्म करने लगी। उनकी कीर्ति फैलने लगी। एक दिन रानी और दासी आपस में सोचने लगी कि पता नहीं राजा की क्या दशा होगी, उसकी खोज का समाचार तो नहीं है। उन्होंने भक्तिपूर्वक भगवान गुरु (बृहस्पति) से प्रार्थना की कि राजा जहां भी हो, वह जल्द ही लौट आए।

उधर राजा परदेश में बहुत उदास रहने लगा। वह प्रतिदिन जंगल से लकड़ी लाकर नगर में बेचता था और बड़ी कठिनाई से अपना दयनीय जीवन व्यतीत करता था। एक दिन वह उदास था, अपनी पुरानी बातों को याद करके रोने लगा और उदास हो गया। उसी समय भगवान बृहस्पति साधु के वेश में राजा के पास आए और बोले, हे लकड़हारे। बताओ इस एकांत वन में तुम किस चिंता में बैठे हो? यह सुनकर राजा की आंखों में आंसू भर आए।

साधु की पूजा करने के बाद राजा ने अपनी सारी कहानी कह सुनाई। महात्मा दयालु होते हैं। उन्होंने राजा से कहा, हे राजन, तेरी पत्नी ने बृहस्पतिदेव के प्रति अपराध किया था, जिसके कारण तेरी यह दशा हुई है। अब चिंता मत करो, परमेश्वर तुम्हें पहले से अधिक धन देगा। देखो, तुम्हारी पत्नी ने गुरुवार का व्रत करना शुरू कर दिया है। अब आप भी गुरुवार का व्रत करें और जल के पात्र में चने की दाल और गुड़ डालकर केले का पूजन करें। फिर कहानी सुनाएं या सुनें।

भगवान आपकी हर मनोकामना पूरी करेंगे। साधु की बात सुनकर राजा ने कहा, हे प्रभु। लकड़ी बेचकर इतने पैसे नहीं बचते कि खाने के बाद कुछ बचा सकूँ। मैंने अपनी रानी को रात में व्याकुल देखा है। मेरे पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिससे मैं उसका समाचार जान सकूँ। मुझे यह भी नहीं पता कि फिर कौन सी कहानी कहूं। साधु ने कहा, हे राजा। व्रत करने का मन बनाएं और बृहस्पति देव की पूजा करें। वह स्वयं तुम्हारे लिए मार्ग बनाएगा।

pdfinbox.com